वाराणसी जिले के मदरसे एवं सामान्य विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति छात्र–छात्राओं की मनोवृत्ति का अध्ययन

मन्जू शुक्ला*

*प्रवक्ता अभय महाविद्यालय तरना, वाराणसी

Contact : dnshukla09@gmail.com

सारांश

कम्प्यूटर शिक्षा वर्तमान युग की आवश्यकता बनती जा रही है। पहले कम्प्यूटर का उपयोग वैज्ञानिक एवं अभियान्त्रिकी गणनाओं के लिए ही होता था। अब कम्प्यूटर का 75 प्रतिशत कार्य अगणितीय प्रकृति का है। आजकल इसका उपयोग कार्यालयों, पुस्तकों के प्रकाशन, फैक्टरियों के स्वचालन, टिकट वितरण, रेलवे आरक्षण, सैनिक उपकरणों के नियन्त्रण, संचयन प्रदर्शन, सूचना देने एवं प्राप्त करने, आरेख ग्राफ और चित्रों के आरेखन, मिसाइलों एवं युवानों के नियन्त्रण, चिकित्सा तथा निदान में गहरा प्रभाव छोड़ रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक मनोवृत्ति मापनी की आवश्यकता प्रतीत हुई समुचित उपकरण के अभाव में विशेषज्ञों से परामर्श तथा कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति के मापन हेतु मापनी का निर्माण किया गया। इस मापनी में 25 पद जिसको विश्वसनीयता का मान 0.74 पाया गया।

मुख्य शब्दावली : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मदरसा, कम्प्यूटर शिक्षा, मनोवृत्ति

प्रस्तावना

रेत (बालू) के कण, जो सूर्य की रश्मियाँ में जवाहरात की तरह चमकते हैं आज और तीव्रता से चमक रहे हैं। क्योंकि यह रेत जिन छोटे–छोटे कणों से बना है यही तत्व आज सम्पूर्ण विश्व को नियन्त्रित कर रहा है । वही रेत जो नदी और समुद्र के किनारे पानी की लहरों के साथ बह जाया करती हैं उसी ने कुछ साल पहले की दुनिया में अचिन्त्य परिवर्तन कर वैज्ञानिक क्रान्ति ला दी है। सिलिकान ने संसार को ही बदल कर रख दिया है। 21 वीं शताब्दी का पर्याय बन चुके कम्प्यूटर के मुख्य घटक में सिलिकान चिप ही है इसी सिलिकान चिप पर ही कम्प्यूटर के इलेक्ट्रॉनिक सर्किट बने होते हैं। जिन्होंने मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को व्यापक रूप से प्रभावित कर अभूतपूर्व परिवर्तन किया है।

कम्प्यूटर एक बहु उपयोगी इलेक्ट्रानिक उपकरण है जो आज की तेज रफ्तार आधुनिक जीवन शैली की कई दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति का एक अनूठा साधन है। आज के युग में कार्य का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ कम्प्यूटर का उपयोग न हो रहा हो।

मुस्लिम समाज के उन्नयन हेतु मदरसा शिक्षा प्रणाली मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा से जोड़ने की विशेष आवश्यकता है यह शोध कार्य इसी उद्देश्य से किया गया है जिससे इसकी स्थिति में सुझाव देकर विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों एवं राष्ट्र/राज्य के नीति निर्धारकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो सके। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने अब शिक्षा के पाठशालाओं और विश्वविद्यालयों के दायरे से निकालकर कम्प्यूटर पर लाकर समेट दिया है। शिक्षा की इस पद्धति को आन लाइन या साइबर शिक्षा कहा जाता है।

शोध का महत्व

कम्प्यूटर एक ऐसा इलेक्ट्रानिक उपकरण है जिसका उपयोग सूचनाओं के संचयन, संग्रहण, तार्किक एवं गणितीय परिशोधन पुनर्संरचना एवं विश्लेषण करने में किया जाता है। आजकल कम्प्यूटर तकनीकी के अद्यतन विकसित रूप की मद्द से ज्यामितीय एवं त्रिविमीय काल्पनिक जटिल संरचनाओं को समझने में मदद मिलती है। ऐसे गणितीय कार्य जो मानवीय क्षमताओं से परे प्रतीत होते हैं आज कम्प्यूटर की मदद से तीव्रता से हल कर लिए जाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लघु शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं–

क. सामान्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

ख. मदरसों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

ग. सामान्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं मदरसों में अध्ययनरत छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

घ. मदरसे एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन।

मुख्य परिकल्पना

''मदरसों तथा सामान्य विद्यालयों में नामांकित विद्यार्थियों के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति प्रेक्षित मनोवृत्ति में अन्तर सम्भव है।''

इस परिकल्पना के निर्माण में इन दोनों प्रकार की शिक्षा व्यवस्थाओं में कम्प्यूटर शिक्षा की उपलब्धता को सामान्य आधार बनाया गया है। सामान्यतः यह प्रकाश में आया है कि सामान्य विद्यालयों के सापेक्ष मदरसों में कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था के प्रति जागरूकता प्रायः कम पायी जाती है। इस तर्काधार के परिप्रेक्ष्य में उक्त परिकल्पना का निरूपण किया गया।

लघु शोध का सीमांकन

इस लघु शोध कार्य हेतु संगणक शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति को प्रभावित करने वाले अनेक चरों एवं आयामों को चयनित किया गया है तथा कम्प्यूटर जैसे बहुआयामी निरन्तर परिवर्तनशील उपकरण से सम्बन्धित अनेकों पक्ष निश्चय ही छूटे होंगे।

यह शोध केवल वाराणसी नगर स्थित सामान्य उच्चतर माध्यमिक एवं मदरसों के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति को प्रमाणित करने वाला एक प्रमुख कारक कम्प्यूटर प्रयोग का अनुभव एवं प्रशिक्षण लघु शोध में सम्मिलित नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

W.R. Borg का कहना है कि ''किसी भी क्षेत्र के साहित्य उस आधारशिला के समान है, जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते हैं, तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकता है।''

कुक डी0एल0 के अनुसार ''अभिक्रमित अधिगम स्वशिक्षण विधियों के व्यापक सम्प्रत्यय को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त एक प्रत्यय है।"

यद्यपि साहित्य बहुत बड़ा है लगातार विकसित भी हो रहा है फिर भी विद्यार्थियों के प्रगति का तकनीक और इंटरनेट आधारित कम्प्यूटर सह दूरवर्ती अधिगम के प्रति अभिवृत्ति के विषय में बहुत ही कम शोध हुए हैं। (Zhang, 1998) के शब्दों में ''दूरवर्ती अधिगम में इण्टरनेट तकनीक एवं इस तकनीकी का अन्य तरीकों के साथ उपयोग के बारे में केवल कुछ ही अध्ययन प्राप्त हुए हैं।''

Guernsey L. 1999, ने अपने लेख Distance education for the not-so-distance, में लिखा है कि छात्र कक्षा कक्ष शिक्षण की तुलना में कम्प्यूटर तकनीकी के उपयोग से अच्छे ग्रेड प्राप्त करते हैं।

शोध अभिकल्प

शोध प्रारूप के माध्यम से ही शोधकर्ता शोध समस्या का समाधान, विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ यथार्थपूर्ण ढंग से एवं शोध के लिए उपलब्ध आर्थिक संसाधनों को ध्यान में रखते हुए करने में समर्थ होता है। इसके अन्तर्गत शोध में प्रस्तुत की जाने वाली सभी विधियाँ एवं प्रविधियाँ, उदाहरणार्थ शोध तथा उसके विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों का वर्णन आदि सम्मिलत रहता है।

''परिस्थिति व सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है विश्वास व विचारधारा जो पाये जा रहे हैं अथवा नई दिशाएँ जो विकसित की जा रही हैं उन्हीं का सम्बन्ध सर्वेक्षण विधि से होता है।''

न्यादर्श

वाराणसी जिले के मदरसों के 40 छात्र 10 छात्राएँ एवं सामान्य विद्यालय के 40 छात्र 10 छात्राओं को चयन किया गया है। इस शोध के न्यादर्श हेतु वाराणसी नगर स्थित 6 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं 3 मदरसों का चयन किया गया है। जिसमें

40 छात्र एवं 10 छात्राएँ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों जैसे ज्ञानोदय बालिका इण्टर कालेज, वाराणसी सुधाकर महिला इण्टर कालेज, वाराणसी जे0पी0 मेहता नगर निगम कालेज वाराणसी, काशी कृषक इण्टर कालेज, वाराणसी के विद्यार्थी हैं। इसी प्रकार 40 छात्र एवं 10 छात्राएँ मदरसा रहमानिया मदनपूरा रोड़ वाराणसी नं0 1 एवं जामिया इस्लामिया मदनपूरा रोड़ वाराणसी, मतियखाना मजहरूल उलुम गोलगड्डा वाराणसी के विद्यार्थी हैं।

प्रस्तुत शोध का उपकरण

इस अभिवृत्ति मापन का प्रयोग मदरसों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों एवं सामान्य उच्चतर माध्यमिक में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को जानने के लिए किया गया है। ताकि कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण को जाना जा सके और भविष्य में यह शोध कार्य इस प्रकार के दूसरे शोधकार्य में सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करे सके।

प्रस्तुत अध्ययन शोध में शोधकर्त्री ने न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों को शामिल किया और प्रश्नावली का प्रयोग किया। प्रश्नावली प्रश्नों की वह क्रमबद्ध तालिका है जो विषय वस्तु के सूचनाएँ अर्जित करने में सहयोग देती है।

उपकरणों का प्रशासन

अनुसंधानकर्त्री ने प्रश्नावली का प्रयोग किया इसके लिए अनुसंधानकर्त्री ने सर्वप्रथम विद्यालयों के प्रधानाचार्य से सम्पर्क स्थापित किया गया तत्पश्चात् उनकी आज्ञा मिल जाने पर कक्षा अध्यापक की सहायता से छात्रों को प्रश्नावली आवंटित की गई तथा भरने से पूर्व उन्हें तत्सम्बन्धी आवश्यक निर्देश दिए गए तथा कुछ समय बाद भरी गई प्रश्नावली वापस ली गई। इस प्रकार से प्रधानाचार्य व कक्षाध्यापकों के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न किया गया। प्रश्नावली के निर्माण में शोधकर्त्री द्वारा 22 प्रश्नों को रखा गया। इन्हीं प्रश्नों का उत्तर मदरसों में अध्ययनरत छात्रों से भरवाया गया। शोधकर्त्री ने प्राप्त उत्तरों से आकड़ों को एकत्र किये और प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण के लिए मध्यमान ज्ञात किया गया।

परिकल्पना नं0 1 का परीक्षण

सामान्य विद्यालय के छात्रों एवं सामान्य विद्यालय की छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 1
वाराणसी जिले के मदरसे के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति की तुलना

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	S.D.	t.	सार्थकता
छात्र	40	53.88	3.03		.05 विश्वास पर सार्थक अंतर नहीं है .01
छात्रा	10	57.2	5.01	2.012	विश्वास पर सार्थक अन्तर है।
कुल	50	–	–		

प्रस्तुत तालिका नं0 1 में सामान्य विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 53.88 है जबकि सामान्य विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान 57.2 है। इनके मध्य सांख्यिकी गणना द्वारा तुलना करने पर t– मान 2.012 पाया गया जो 98 स्वातन्त्रय संख्या पर .05 विश्वास स्तर पर मानक 1.98 से अधिक और .01 विश्वास स्तर के मानक t मान 2.63 से कम है। अतः यह शून्य परिकल्पना की सामान्य विद्यालय के छात्र एवं सामान्य विद्यालय की छात्रा की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। .05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है जबकि .01 विश्वास स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि छात्रों से छात्राओं की मनोवृत्ति अधिक है क्योंकि आज के आधुनिक जीवन शैली में लड़किया किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं हैं

टेक्नॉलजी के क्षेत्र में भी लड़कियाँ लड़कों से पीछे नहीं हैं।

परिकल्पना नं0 2 का परीक्षण

मदरसे में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 2
वाराणसी जिले के मदरसे के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति की तुलना

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	S.D.	t.	सार्थकता
छात्र	40	53.88	5.3		.05 व .01 विश्वास पर सार्थक नहीं है।
छात्रा	10	57.2	10.4	0.55	
कुल	50	–	–		

प्रस्तुत तालिका नं0 2 में मदरसे के छात्रों का मध्यमान 47.82 जबकि छात्राओं का मध्यमान 48 है। इसके मध्य सांख्यिकी गणना द्वारा t-मान .055 पाया गया जो 98 स्वातन्त्रय संख्या पद.05 विश्वास स्तर के मानक मान 1.98 एवं .01 विश्वास स्तर के मानक मान 2.63 दोनों से कम है। अतः यह शून्य परिकल्पना कि मदरसे में अध्ययनरत छात्र–छात्रा की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, दोनों विश्वास स्तरों पर स्वीकृत की जाती है। मदरसों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति से यही पता लगता है कि आज भूमण्डलीकरण के युग में मुस्लिम छात्र भी किसी से कम नहीं हैं मुस्लिम लड़कियों में पर्दा प्रथा के बावजूद भी उनमें जागृति है और इन रूढ़िवादिता के बावजूद भी जागृति स्तर पाया गया। कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की अभिवृत्ति लगभग समान पायी गई है जो उनके मध्यमान से स्पष्ट है।

परिकल्पना नं0 3 का परीक्षण

सामान्य विद्यालय एवं मदरसों में अध्ययनरत छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 3
वाराणसी जिले के मदरसे के छात्र–छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति की तुलना

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	S.D.	t.	सार्थकता
छात्र	10	57.2	5.01		.05 व .01 विश्वास पर सार्थक नहीं है।
छात्रा	10	48	10ण्49	7.058	
कुल	20	–	–		

प्रस्तुत तालिका नं0 3 में सामान्य विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान 57.2 है और मदरसे में अध्ययनरत छात्राओं का मध्यमान 48 है इसके मध्य सांख्यिकी गणना द्वारा तुलना करने पर मान 2.7058 पाया गया जो 98 स्वातन्त्रय संख्या .05 विश्वास स्तर के मानक मान 1.98 एवं .01 विश्वास स्तर के मानक मान 2.63 दोनों से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना की सामान्य विद्यालय की छात्राएं एवं मदरसे की छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है अस्वीकृत की जाती है। दोनों की मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर है क्योंकि अभी भी मुस्लिम स्त्रियों में पर्दा प्रथा अधिक है और सामान्य लड़कियों की अपेक्षा शिक्षा में भी पिछड़ापन है लेकिन फिर भी ये आज की दुनिया से कदम से कदम मिलाकर चलने का प्रयास अवश्य कर रही हैं।

परिकल्पना नं0 4 का परीक्षण

मदरसे और सामान्य विद्यालय के छात्र मदरसे एवं सामान्य विद्यालय की छात्रा की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 4
वाराणसी जिले के सामान्य विद्यालय एवं मदरसे के छात्र एवं छात्राओं की लिंग के आधार पर कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति की तुलना

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	S.D.	t.	सार्थकता
छात्र	80	50.85	4.54		.05 व .01 विश्वास पर सार्थक नहीं है।
छात्रा	20	52.6	9.18	0.8278	
कुल	100	–	–		

प्रस्तुत तालिका नं0 4 में सामान्य विद्यालय एवं मदरसों के छात्रों का मध्यमान 50.85 है और मदरसे एवं सामान्य विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 52.6 है। इनके मध्य सांख्यिकी गणना करने पर मान 0.8278 पाया गया जो 98 स्वातन्त्रय संख्या पर .05 विश्वास स्तर के मानक मान 1.98 एवं .01 विश्वास स्तर के मानक मान 2.63 दोनों से कम है अतः शून्य परिकल्पना सामान्य विद्यालय एवं मदरसे के छात्रों तथा सामान्य विद्यालय एवं मदरसे के छात्राओं की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं, दोनों विश्वास स्तरों पर स्वीकृत की जानी है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि लिंग के आधार पर छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में स्वल्प अन्तर है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के अधिक मध्यमान से यह स्पष्ट है कि छात्राएं कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हो रही हैं।

तालिका नं0 5
सामान्य विद्यालय एवं मदरसों के विद्यार्थी की संगणक शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना एवं व्याख्या

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	S.D.	t.	सार्थकता
मदरसे	50	48.8	6.50		.05 व .01 विश्वास पर सार्थक अंतर नहीं है।
सामान्य विद्यालय	50	54	3.80	1.123	
कुल	100	–	–		

प्रस्तुत तालिका नं0 5 में मदरसों के विद्यार्थियों का मध्यमान 48.8 है जबकि सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 54.0 है। इनके मध्य सांख्यिकीय गणना द्वारा तुलना करने पर **t-** मान 1.123 पाया गया जो 98 स्वातन्त्रय संख्या पर .05 विश्वास स्तर के मानक मान 1.98 एवं .01 विश्वास स्तर के मानक मान 2.63 दोनों से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना की मदरसों के विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है विश्वास स्तरों पर अस्वीकृत की जाती है।

तालिका नं0 5 से स्पष्ट है कि मदरसों के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति से कम है। इसका कारण मुस्लिम समुदाय की रूढ़िवादी जीवनशैली प्रतीत होती है, जहाँ वाह्य सामाजिक परिवर्तनों का कम प्रभाव पड़ता है। उनके मध्यमान 48.8 से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भूमण्डलीयकरण व सामाजिक परिवर्तन के प्रभाव से मुस्लिम समुदाय भी अछूते नहीं हैं। धीमी गति से ही सही इस समुदाय को सामाजिक गतिशीलता प्रभावित कर रही है। सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्यमान 54.00 से यह स्पष्ट है कि इनकी कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, मदरसों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है, परन्तु इनका मान औसत के आस–पास ही है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि सभी सामान्य विद्यालयों में या तो कम्प्यूटर उपलब्ध नहीं है या उपलब्ध होने की स्थिति में चालू हालत में नहीं है, जिसके कारण विद्यार्थियों में कम्प्यूटर के प्रति जानकारी की मात्रा औसत दर्जे की है।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध के उपरान्त भावी शोध हेतु निम्न सुझाव अपेक्षित है –

क. मदरसों के छात्र एवं छात्राओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

ख. मदरसों एवं सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर कम्प्यूटर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।

निष्कर्ष

किसी भी स्वस्थ्य राष्ट्र के लिए जरूरी है कि वहाँ के रहने वाले सभी वर्ग साथ–साथ विकास करें। अगर उनका कोई भी वर्ग पिछड़ जाता है या विकास नीतियों का लाभ नहीं उठा पाता है तो राष्ट्र को उनके बारे में विचार करना ही चाहिए–जैसा कि स्पष्ट है कि मुस्लिम शिक्षा प्रणाली मदरसों की व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है क्योंकि मदरसों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में नकारात्मकता का प्रभाव है। मदरसों एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति सकारात्मक, मनोवृत्ति को देखते हुए भविष्य में मदरसों एवं विद्यालयों में कम्प्यूटर का सहज उपयोग होने की संकल्पना साकार होते देख सकते हैं। आज जिस प्रकार टेलिविजन, टेलीफोन और मोबाइल फोन घर–घर और प्रत्येक व्यक्ति के पास देख रहे हैं कल उसी तरह कम्प्यूटर भी उतने ही प्रचलित हो जायेंगे।

इस शोध के परिणामों से भावी पीढ़ी के विद्यार्थियों की सकारात्मक अभिवृत्ति स्पष्ट दिखाई दे रही है। विद्यार्थियों में इस उपकरण के उपयोग के प्रति उत्साह तथा जिज्ञासा आने वाले समय के लिए सुनहरा संकेत है। विद्यालयों में संसाधन सुविधाएँ और अवसर बढ़ाने का उसकी मनोवृत्ति पर सीधा प्रभाव पढ़ेगा।

उपादेयता

इस शोध की सबसे महत्वपूर्ण उपादेयता इसके सकारात्मक परिणामों में निहित है। विद्यार्थियों के मनोवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान कर उन्हें इस दिशा में प्रेरित किया जा सकता है। हम कम्प्यूटर के Hardware तथा Software के क्षेत्र में तो विश्व में शिखर के स्थान पर हैं ही, प्रभावी शिक्षण और शिक्षा के आधुनिक सहायक के रूप में कम्प्यूटर के अनुप्रयोगों से भी नई उचाईयों तक निश्चित पहुँचेंगे।

मदरसों में अधिक सकारात्मक सोच रखने वाले विद्यार्थियों को आधुनिक शैक्षिक तकनीकी का सहयोग प्रदान करने हेतु शोध के निष्कर्षों की मदद ली जा सकती है एवं जिन विद्यार्थियों का दृष्टिकोण प्रस्तुत शोध के परिणाम स्वरूप नकारात्मक है अथवा कम सकारात्मक है, उनकी मनोवृत्ति की नकारात्मकता के कारणों का अध्ययन करके समय रहते उनके निराकरण की कोई योजना बनाई जा सकती है तथा ऐसे छात्रों को अभिप्रेरित करके उन्हें कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इस शोध द्वारा मदरसों को आधुनिक शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अनुमान लगाया जा सकता है और वर्तमान मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था में व्यापक सुधार करने में इसकी मदद की जा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ

- कुमार, रमेश (2005). शिक्षा पद्धति परिवर्तन की आवश्यकता. पंजाब केसरी, 'सप्तकिरण', पृष्ठ–3।
- कोहड, लिपिका (2004). बी0एड0 हुआ पुराना, टीचिंग टेक्नालॉजी का है जमाना. पंजाब केसरी, सप्तकिरण पृष्ठ–3 ।
- गोयल, योगेश कुमर (2005). आई0टी0चार, नैट पर भी कमी नहीं है, झोलाछाप डॉक्टरों की. पंजाब केसरी, सप्तकिरण, पृष्ठ–2।
- झा, अमरेश (2004). डिजिटल क्रान्ति और इक्कसवीं सदी की इलेक्ट्रानिक. पंजाब केसरी, सप्तकिरण, पृष्ठ–3 ।
- झा, अमरेश (2004). डिजिटल क्रान्ति और इक्कसवीं सदी की इलेक्ट्रानिक पत्रकारिता. पंजाब केसरी, सप्तकिरण, पृष्ठ–3 ।
- शर्मा, अजय (2004). सूचना प्रौद्योगिकी में कैटियरना. पंजाब केसरी, सप्तकिरण, पृष्ठ–3।